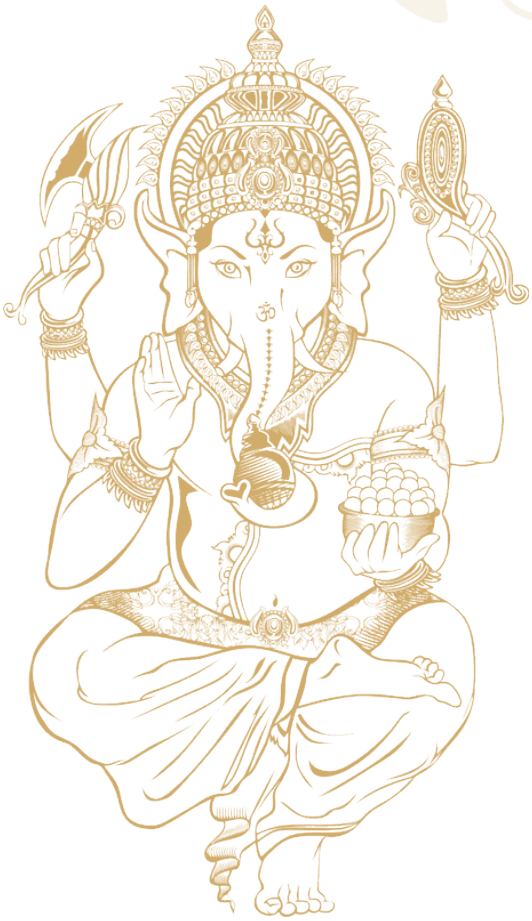

Yogesh

11 Dec 1987

11:20 PM

Akola

Model: Web-MyKundli

Order No: 120324601

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

Pandit Srinivas Srimali, Pandit Jitendra Srimali
No. 130, Mint Street, 3rd floor, Sowcarpet, chennai - 600079
9884182821, 9841085352
Jksrimali27@gmail.com

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**11/12/1987**
दिन	शुक्रवार
जन्म समय	**23:20:00 घंटे**
इष्ट	41:20:52 घटी
स्थान	**Akola**
राज्य	Maharashtra
देश	India

अक्षांश	20:40:00 उत्तर
रेखांश	77:05:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:21:40 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	22:58:20 घंटे
वेलान्तर	00:07:01 घंटे
साम्पातिक काल	04:17:58 घंटे
सूर्योदय	06:47:39 घंटे
सूर्यास्त	17:41:44 घंटे
दिनमान	10:54:05 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	हेमन्त
सूर्य के अंश	25:27:27 वृश्चिक
लग्न के अंश	12:32:56 सिंह

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	सिंह - सूर्य
राशि-स्वामी	**सिंह - सूर्य**
नक्षत्र-चरण	**मघा - 2**
नक्षत्र स्वामी	केतु
योग	विष्कुम्भ
करण	वणिज
गण	राक्षस
योनि	मूषक
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	वनचर
वर्ग	मूषक
युँजा	मध्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	मी-मीत
पाया(राशि-नक्षत्र)	स्वर्ण - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	धनु

Pandit Srinivas Srimali, Pandit Jitendra Srimali
No. 130, Mint Street, 3rd floor, Sowcarpet, chennai - 600079
9884182821, 9841085352
Jksrimali27@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1909	मार्गशीर्ष	20
पंजाबी	संवत : 2044	मार्गशीर्ष	26
बंगाली	सन् : 1394	मार्गशीर्ष	25
तमिल	संवत : 2044	कार्तिगई	25
केरल	कोल्लम : 1163	वृश्चिकम	25
नेपाली	संवत : 2044	मार्गशीर्ष	26
चैत्रादि	संवत : 2044	पौष	कृष्ण 6
कार्तिकादि	संवत : 2044	मार्गशीर्ष	कृष्ण 6

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 6
तिथि समाप्ति काल _____: 25:30:59
जन्म तिथि _____: 6
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: आश्लेषा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 10:10:07 घंटे
जन्म योग _____: मघा
सूर्योदय कालीन योग ____: वैधृति
योग समाप्ति काल _____: 19:43:02 घंटे
जन्म योग _____: विष्कुम्भ
सूर्योदय कालीन करण ____: गर
करण समाप्ति काल _____: 12:10:18 घंटे
जन्म करण _____: वणिज
भयात _____: 32:54:44
भभोग _____: 67:41:16
भोग्य दशा काल _____: केतु 3 वर्ष 7 मा 6 दि

घात चक्र

मास _____: ज्येष्ठ
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: शनिवार
नक्षत्र _____: मूल
योग _____: धृति
करण _____: बव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मार्जार
लग्न _____: मीन
सूर्य _____: धनु
चन्द्र _____: मकर
मंगल _____: मकर
बुध _____: तुला
गुरु _____: कुम्भ
शुक्र _____: मीन
शनि _____: वृश्चिक
राहु _____: मेष

Pandit Srinivas Srimali, Pandit Jitendra Srimali
No. 130, Mint Street, 3rd floor, Sowcarpet, chennai - 600079
9884182821, 9841085352
Jksrimali27@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

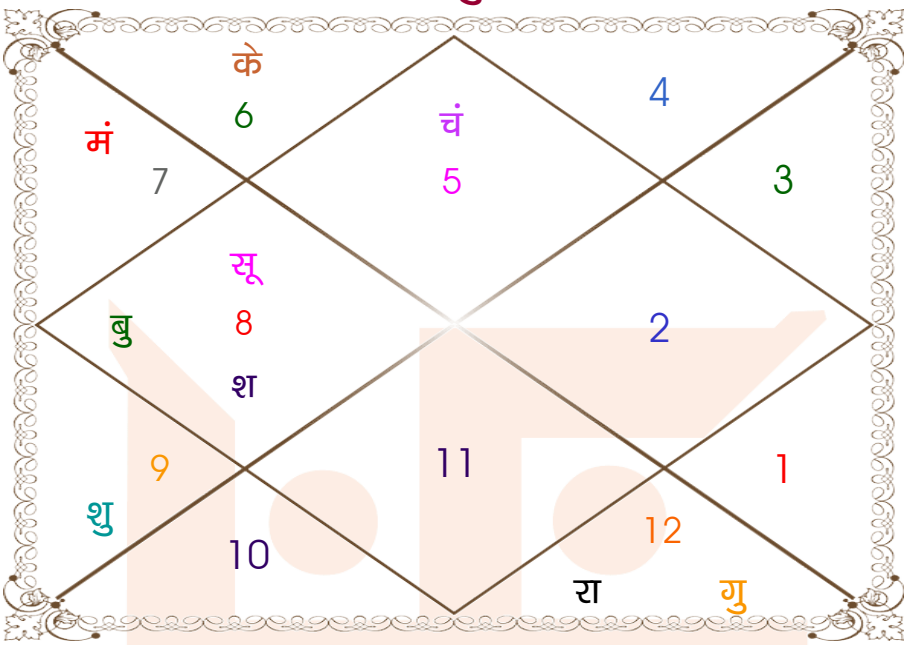

चन्द्र कुंडली

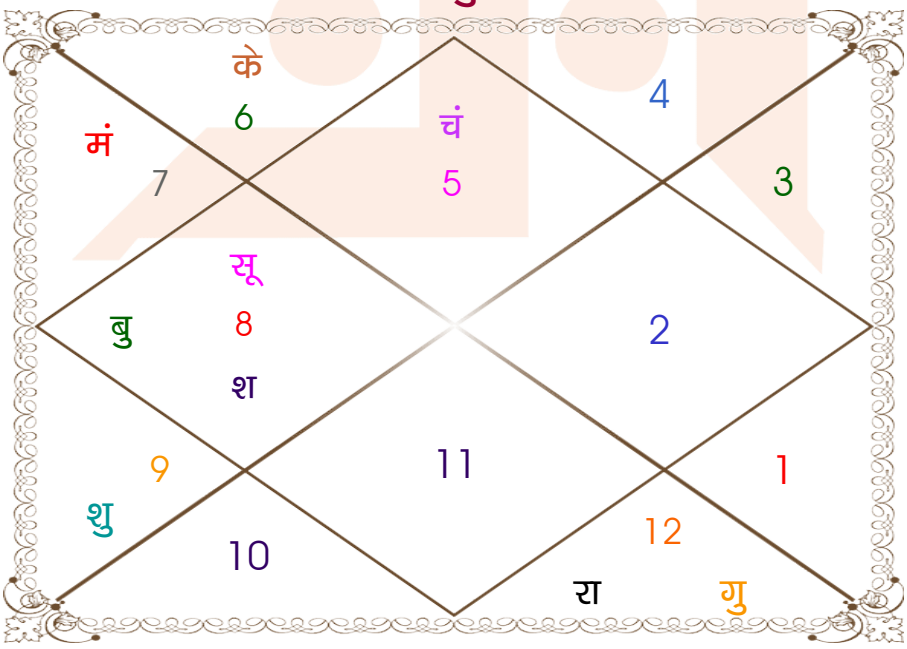

Pandit Srinivas Srimali, Pandit Jitendra Srimali
No. 130, Mint Street, 3rd floor, Sowcarpet, chennai - 600079
9884182821, 9841085352
Jksrimali27@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

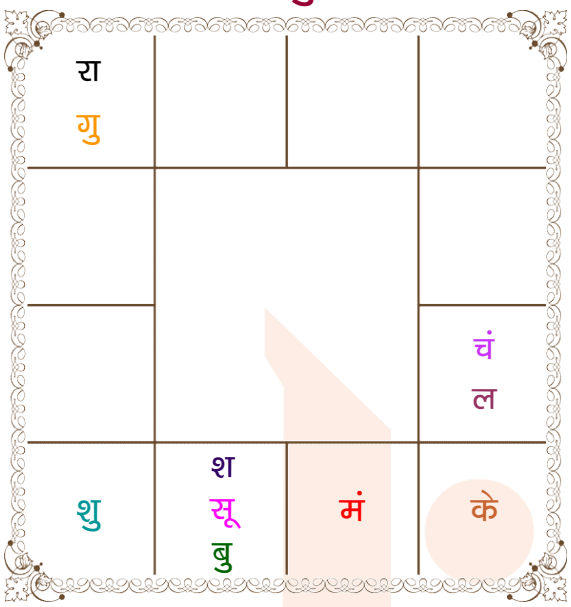

लग्न कुंडली

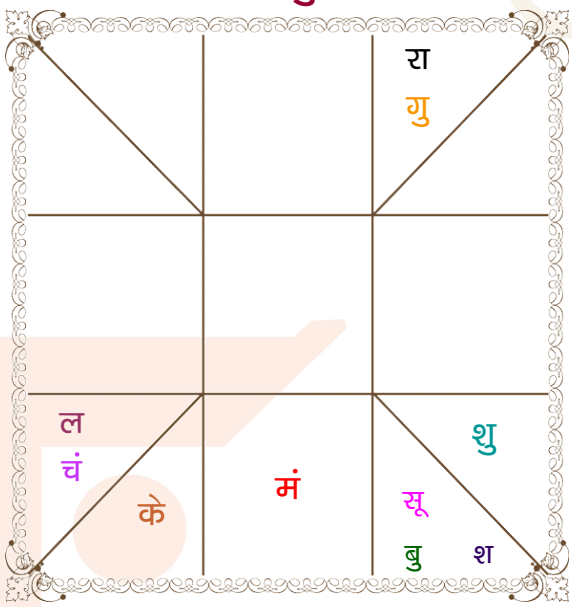

विंशोत्तरी
केतु 3वर्ष 7मा 6दि

केतु

11/12/1987

19/07/2104

केतु	19/07/1991
शुक्र	19/07/2011
सूर्य	18/07/2017
चन्द्र	19/07/2027
मंगल	18/07/2034
राहु	18/07/2052
गुरु	18/07/2068
शनि	19/07/2087
बुध	19/07/2104

योगिनी
भद्रिका 2वर्ष 6मा 26दि

भद्रिका

08/07/2021

08/07/2026

भद्रिका	18/03/2022
उल्का	17/01/2023
सिद्धा	07/01/2024
संकटा	16/02/2025
मंगला	07/04/2025
पिंगला	18/07/2025
धान्या	17/12/2025
भ्रामरी	08/07/2026

Pandit Srinivas Srimali, Pandit Jitendra Srimali
No. 130, Mint Street, 3rd floor, Sowcarpet, chennai - 600079
9884182821, 9841085352
Jksrimali27@gmail.com

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			सिंह	12:32:56	332:51:16	मघा	4	10	सूर्य	केतु	बुध	---
सूर्य			वृश्चि	25:27:27	01:00:59	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	राहु	मित्र राशि
चंद्र			सिंह	06:28:30	11:48:49	मघा	2	10	सूर्य	केतु	राहु	मित्र राशि
मंगल			तुला	17:51:11	00:39:29	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	सूर्य	सम राशि
बुध		अ	वृश्चि	19:02:50	01:33:40	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	केतु	सम राशि
गुरु	व		मीन	26:06:00	00:00:47	रेवती	3	27	गुरु	बुध	राहु	स्वराशि
शुक्र			धनु	23:16:31	01:14:23	पूर्वाषाढ़ा	3	20	गुरु	शुक्र	शनि	सम राशि
शनि		अ	वृश्चि	29:23:29	00:07:05	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	शनि	शत्रु राशि
राहु	व		मीन	04:45:15	00:02:18	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	सम राशि
केतु	व		कन्या	04:45:15	00:02:18	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	शनि	शत्रु राशि
हर्ष			धनु	02:45:04	00:03:37	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	---
नेप			धनु	13:20:20	00:02:11	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	---
प्लूटो			तुला	17:42:14	00:02:02	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	सूर्य	---
दशम भाव			वृष	12:40:12	--	रोहिणी	--	4	शुक्र	चंद्र	राहु	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:41:19

लग्न-चलित

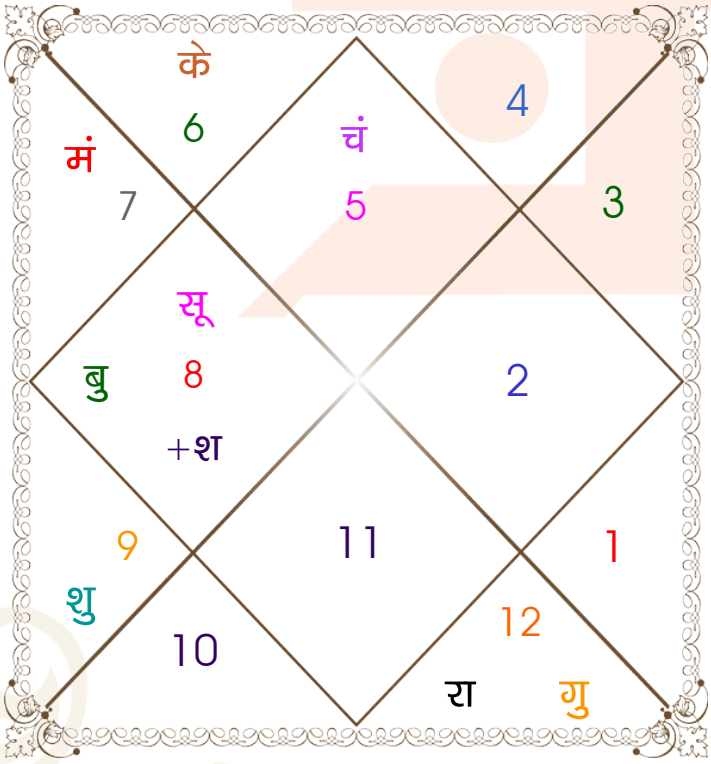

चन्द्र कुंडली

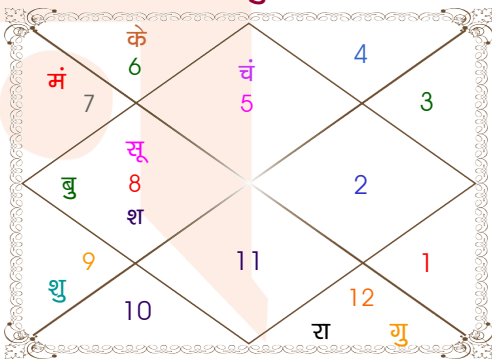

नवमांश कुंडली

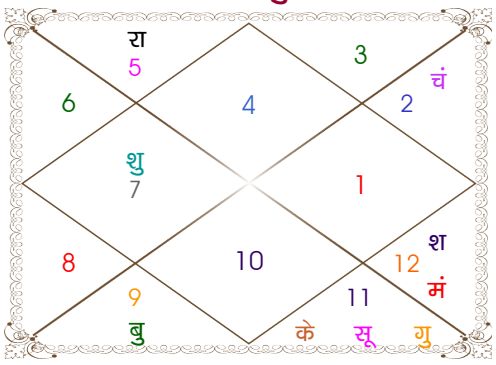

Pandit Srinivas Srimali, Pandit Jitendra Srimali
No. 130, Mint Street, 3rd floor, Sowcarpet, chennai - 600079
9884182821, 9841085352
Jksrimali27@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कर्क	27:34:08	सिंह	12:32:56
2	सिंह	27:34:08	कन्या	12:35:21
3	कन्या	27:36:34	तुला	12:37:47
4	तुला	27:38:59	वृश्चिक	12:40:12
5	वृश्चिक	27:38:59	धनु	12:37:47
6	धनु	27:36:34	मकर	12:35:21
7	मकर	27:34:08	कुम्भ	12:32:56
8	कुम्भ	27:34:08	मीन	12:35:21
9	मीन	27:36:34	मेष	12:37:47
10	मेष	27:38:59	वृष	12:40:12
11	वृष	27:38:59	मिथुन	12:37:47
12	मिथुन	27:36:34	कर्क	12:35:21

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	सिंह	12:32:56
2	कन्या	10:43:32
3	तुला	11:23:43
4	वृश्चिक	12:40:12
5	धनु	13:17:35
6	मकर	13:15:08
7	कुम्भ	12:32:56
8	मीन	10:43:32
9	मेष	11:23:43
10	वृष	12:40:12
11	मिथुन	13:17:35
12	कर्क	13:15:08

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा

चलित कुंडली

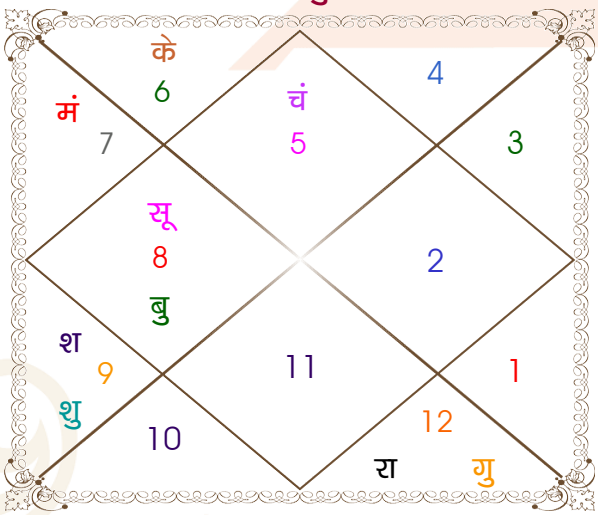

भाव कुंडली

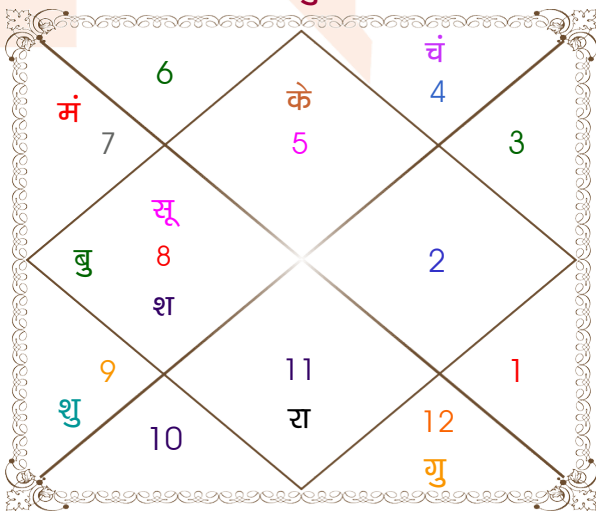

Pandit Srinivas Srimali, Pandit Jitendra Srimali
No. 130, Mint Street, 3rd floor, Sowcarpet, chennai - 600079
9884182821, 9841085352
Jksrimali27@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 3 वर्ष 7 मास 6 दिन

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
11/12/1987		19/07/1991		19/07/2011		18/07/2017		19/07/2027	
19/07/1991		19/07/2011		18/07/2017		19/07/2027		18/07/2034	
	00/00/0000	शुक्र	17/11/1994	सूर्य	05/11/2011	चंद्र	18/05/2018	मंगल	15/12/2027
	00/00/0000	सूर्य	17/11/1995	चंद्र	06/05/2012	मंगल	18/12/2018	राहु	01/01/2029
	00/00/0000	चंद्र	18/07/1997	मंगल	11/09/2012	राहु	17/06/2020	गुरु	08/12/2029
	00/00/0000	मंगल	17/09/1998	राहु	05/08/2013	गुरु	17/10/2021	शनि	17/01/2031
	11/12/1987	राहु	17/09/2001	गुरु	25/05/2014	शनि	19/05/2023	बुध	14/01/2032
राहु	06/07/1988	गुरु	18/05/2004	शनि	07/05/2015	बुध	17/10/2024	केतु	11/06/2032
गुरु	12/06/1989	शनि	19/07/2007	बुध	12/03/2016	केतु	18/05/2025	शुक्र	11/08/2033
शनि	21/07/1990	बुध	18/05/2010	केतु	18/07/2016	शुक्र	17/01/2027	सूर्य	17/12/2033
बुध	19/07/1991	केतु	19/07/2011	शुक्र	18/07/2017	सूर्य	19/07/2027	चंद्र	18/07/2034

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
18/07/2034		18/07/2052		18/07/2068		19/07/2087		19/07/2104	
18/07/2052		18/07/2068		19/07/2087		19/07/2104		00/00/0000	
राहु	31/03/2037	गुरु	05/09/2054	शनि	22/07/2071	बुध	14/12/2089	केतु	15/12/2104
गुरु	24/08/2039	शनि	18/03/2057	बुध	31/03/2074	केतु	11/12/2090	शुक्र	14/02/2106
शनि	30/06/2042	बुध	24/06/2059	केतु	10/05/2075	शुक्र	11/10/2093	सूर्य	22/06/2106
बुध	16/01/2045	केतु	30/05/2060	शुक्र	09/07/2078	सूर्य	18/08/2094	चंद्र	21/01/2107
केतु	04/02/2046	शुक्र	29/01/2063	सूर्य	21/06/2079	चंद्र	17/01/2096	मंगल	19/06/2107
शुक्र	04/02/2049	सूर्य	17/11/2063	चंद्र	19/01/2081	मंगल	13/01/2097	राहु	12/12/2107
सूर्य	29/12/2049	चंद्र	18/03/2065	मंगल	28/02/2082	राहु	03/08/2099		00/00/0000
चंद्र	30/06/2051	मंगल	22/02/2066	राहु	04/01/2085	गुरु	09/11/2101		00/00/0000
मंगल	18/07/2052	राहु	18/07/2068	गुरु	19/07/2087	शनि	19/07/2104		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 3 वर्ष 7 मा 5 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Pandit Srinivas Srimali, Pandit Jitendra Srimali
No. 130, Mint Street, 3rd floor, Sowcarpet, chennai - 600079
9884182821, 9841085352
Jksrimali27@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु	
18/05/2025		17/01/2027		19/07/2027		15/12/2027		01/01/2029	
17/01/2027		19/07/2027		15/12/2027		01/01/2029		08/12/2029	
शुक्र	28/08/2025	सूर्य	26/01/2027	मंगल	27/07/2027	राहु	10/02/2028	गुरु	16/02/2029
सूर्य	27/09/2025	चंद्र	10/02/2027	राहु	19/08/2027	गुरु	01/04/2028	शनि	11/04/2029
चंद्र	17/11/2025	मंगल	21/02/2027	गुरु	08/09/2027	शनि	01/06/2028	बुध	29/05/2029
मंगल	22/12/2025	राहु	20/03/2027	शनि	01/10/2027	बुध	25/07/2028	केतु	18/06/2029
राहु	24/03/2026	गुरु	14/04/2027	बुध	22/10/2027	केतु	17/08/2028	शुक्र	14/08/2029
गुरु	13/06/2026	शनि	13/05/2027	केतु	31/10/2027	शुक्र	20/10/2028	सूर्य	31/08/2029
शनि	17/09/2026	बुध	07/06/2027	शुक्र	25/11/2027	सूर्य	08/11/2028	चंद्र	28/09/2029
बुध	12/12/2026	केतु	18/06/2027	सूर्य	02/12/2027	चंद्र	10/12/2028	मंगल	18/10/2029
केतु	17/01/2027	शुक्र	19/07/2027	चंद्र	15/12/2027	मंगल	01/01/2029	राहु	08/12/2029

मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य	
08/12/2029		17/01/2031		14/01/2032		11/06/2032		11/08/2033	
17/01/2031		14/01/2032		11/06/2032		11/08/2033		17/12/2033	
शनि	10/02/2030	बुध	09/03/2031	केतु	23/01/2032	शुक्र	21/08/2032	सूर्य	18/08/2033
बुध	09/04/2030	केतु	30/03/2031	शुक्र	17/02/2032	सूर्य	12/09/2032	चंद्र	28/08/2033
केतु	02/05/2030	शुक्र	30/05/2031	सूर्य	24/02/2032	चंद्र	17/10/2032	मंगल	05/09/2033
शुक्र	09/07/2030	सूर्य	17/06/2031	चंद्र	08/03/2032	मंगल	11/11/2032	राहु	24/09/2033
सूर्य	29/07/2030	चंद्र	17/07/2031	मंगल	16/03/2032	राहु	14/01/2033	गुरु	11/10/2033
चंद्र	01/09/2030	मंगल	07/08/2031	राहु	08/04/2032	गुरु	12/03/2033	शनि	31/10/2033
मंगल	24/09/2030	राहु	01/10/2031	गुरु	28/04/2032	शनि	18/05/2033	बुध	19/11/2033
राहु	24/11/2030	गुरु	18/11/2031	शनि	21/05/2032	बुध	18/07/2033	केतु	26/11/2033
गुरु	17/01/2031	शनि	14/01/2032	बुध	11/06/2032	केतु	11/08/2033	शुक्र	17/12/2033

मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध	
17/12/2033		18/07/2034		31/03/2037		24/08/2039		30/06/2042	
18/07/2034		31/03/2037		24/08/2039		30/06/2042		16/01/2045	
चंद्र	04/01/2034	राहु	13/12/2034	गुरु	25/07/2037	शनि	05/02/2040	बुध	09/11/2042
मंगल	16/01/2034	गुरु	24/04/2035	शनि	11/12/2037	बुध	01/07/2040	केतु	02/01/2043
राहु	17/02/2034	शनि	27/09/2035	बुध	14/04/2038	केतु	31/08/2040	शुक्र	07/06/2043
गुरु	18/03/2034	बुध	14/02/2036	केतु	04/06/2038	शुक्र	21/02/2041	सूर्य	23/07/2043
शनि	21/04/2034	केतु	11/04/2036	शुक्र	29/10/2038	सूर्य	14/04/2041	चंद्र	09/10/2043
बुध	21/05/2034	शुक्र	22/09/2036	सूर्य	11/12/2038	चंद्र	09/07/2041	मंगल	02/12/2043
केतु	02/06/2034	सूर्य	11/11/2036	चंद्र	22/02/2039	मंगल	08/09/2041	राहु	20/04/2044
शुक्र	08/07/2034	चंद्र	01/02/2037	मंगल	15/04/2039	राहु	11/02/2042	गुरु	22/08/2044
सूर्य	18/07/2034	मंगल	31/03/2037	राहु	24/08/2039	गुरु	30/06/2042	शनि	16/01/2045

Pandit Srinivas Srimali, Pandit Jitendra Srimali
No. 130, Mint Street, 3rd floor, Sowcarpet, chennai - 600079
9884182821, 9841085352
Jksrimali27@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	2
भाग्यांक	3
मित्र अंक	2, 7, 8, 3
शत्रु अंक	4, 5, 6
शुभ वर्ष	20,29,38,47,56
शुभ दिन	मंगल, रवि, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, सूर्य, गुरु
मित्र राशि	वृश्चिक, मेष
मित्र लग्न	वृश्चिक, मेष, मिथुन
अनुकूल देवता	सूर्य
शुभ रत्न	माणिक्य
शुभ उपरत्न	लाल हकीक, लाल तुर्मली
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	नारंगी
शुभ दिशा	पूर्व
शुभ समय	सूर्योदय
दान पदार्थ	मूंगा, केसर, रक्तचन्दन
दान अन्न	गेहुँ
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	91%	सुख, स्वास्थ्य
मूंगा	मंगल	78%	पराक्रम, भाग्योदय, सुख
हीरा	शुक्र	78%	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम
पन्ना	बुध	73%	सुख, धनार्जन, धन
लहसुनिया	केतु	66%	धन, सुख
मोती	चंद्र	55%	स्वास्थ्य, कम खर्च
पुखराज	गुरु	43%	दुर्घटना, सन्तति कष्ट
नीलम	शनि	9%	ग्रह कलेश, शत्रु व रोग, दाम्पत्य कष्ट
गोमेद	राहु	0%	दुर्घटना

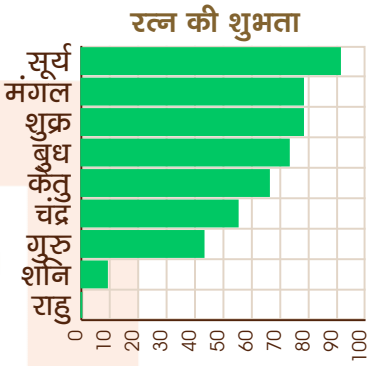

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	19/07/1991	78%	34%	84%	73%	43%	84%	0%	0%	78%
शुक्र	19/07/2011	78%	34%	78%	80%	43%	91%	22%	0%	72%
सूर्य	18/07/2017	100%	61%	84%	73%	53%	66%	0%	0%	53%
चंद्र	19/07/2027	97%	67%	78%	80%	43%	78%	9%	0%	53%
मंगल	18/07/2034	97%	61%	91%	61%	53%	78%	9%	0%	72%
राहु	18/07/2052	78%	34%	66%	73%	43%	84%	22%	0%	53%
गुरु	18/07/2068	97%	61%	84%	61%	59%	66%	9%	0%	66%
शनि	19/07/2087	78%	34%	66%	80%	43%	84%	34%	0%	53%
बुध	19/07/2104	97%	34%	78%	86%	43%	84%	9%	0%	66%

Pandit Srinivas Srimali, Pandit Jitendra Srimali
No. 130, Mint Street, 3rd floor, Sowcarpet, chennai - 600079
9884182821, 9841085352
Jksrimali27@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/12/1987-17/12/1987	----------	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साढेसाती द्वितीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------

द्वितीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041

तृतीय चक्रः

चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढेसाती द्वितीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	----------	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	सुख हानि
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	दुर्घटना से बचाव
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	व्यय
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	धन

Pandit Srinivas Srimali, Pandit Jitendra Srimali
No. 130, Mint Street, 3rd floor, Sowcarpet, chennai - 600079
9884182821, 9841085352
Jksrimali27@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति तृतीय भाव में है। यह भाव पराक्रम मित्र एवं भाई बहनों का प्रतिनिधि भाव है तथा मंगल इनका कारक है अतः तृतीय भाव में मंगल की स्थिति शुभ मानी जाती है। इसके प्रभाव से आप एक पराक्रमी पुरुष होंगे तथा अपने समस्त सांसारिक कार्य कलापों को आप निर्भय होकर सम्पन्न करेंगे तथा इनमें आपको समय समय पर इच्छित सफलता प्राप्त होगी। साथ ही भाई बहनों से भी आवश्यक सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी तथा अपने परिश्रम एवं पराक्रम से आप संचार साधनों को भी अर्जित करने में समर्थ रहेंगे।

कुंडली में तृतीयस्थ मंगल की चतुर्थ दृष्टि षष्ठ भाव पर पड़ेगी इसके प्रभाव से शत्रु वर्ग को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे तथा प्रतियोगी परीक्षाओं मुकद्दमों या चुनाव आदि में आपको जीवन में सामान्यतया सफलताएं मिलती रहेंगी। साथ ही इच्छित मात्रा में धनऐश्वर्य की भी प्राप्ति होगी परन्तु पित गर्मी अथवा रक्त विकार संबंधी किसी परेशानी से शारीरिक कष्ट हो सकता है। नवम भाव पर सप्तमस्थ दृष्टि से धर्म एवं धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा भाग्य की अपेक्षा कर्म करने पर ही आप अधिक विश्वास करेंगे। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप स्वपराक्रम एवं योग्यता से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। यद्यपि इनमें आपको न्यूनाधिक समस्याओं एवं व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु अंततोगत्वा आप अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफल रहेंगे। लेकिन पिता के स्वास्थ्य के लिए यह स्थिति मध्यम रहेगी परन्तु समाज में वे सम्मानीय पुरुष होंगे तथा अन्य जनों से पूर्ण आदर प्राप्त करेंगे।

इस प्रकार मंगल की इस स्थिति के प्रभाव से आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुख शान्ति से परिपूर्ण रहेगा तथा परिवार का यथोचित पालन करने में आप समर्थ रहेंगे।

पारिवारिक जनों से आपको यथोचित सहयोग एवं प्रोत्साहन मिलता रहेगा जिससे आप उत्साह पूर्वक अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में कर्कोटक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक का पैतृक धन सम्पत्ति आंशिक रूप में नुकसान होता है। भाग्य उदय होने में थोड़ी बहुत रुकावट आती है परन्तु कालान्तर में वह व्यवधान स्वतः हट जाता है। व्यापार कार्य में विशेष रूप से परिश्रम करने पर लाभ मिलता है। नौकरी में थोड़ा बहुत व्यवधान उपस्थित होता है और यदि नौकरी मिल जाती है तो पदावनति होने का भय रहता है।

इस योग के प्रभाव से जातक को अपनी वाणी पर नियन्त्रण नहीं रहता और दूषित भी हो जाता है। जातक बात-बात पर लड़ाई झगड़े करने को तैयार हो जाता है। जातक को परिश्रम करने के बावजूद भी सही फल प्राप्त नहीं होता है। उधार में दिया हुआ द्रव्य प्रायः वापस नहीं आता है और जातक थोड़ा बहुत चिड़चिड़ा हो जाता है एवं कभी-कभी झंझट करने को भी तैयार हो जाता है तथा मानसिक परेशानी घेरे रहती है। कभी रोग व्याधि शरीर में लग जाती है और जातक को दुर्घटना का भय बना रहता है। आय की अपेक्षा व्यय अधिक होने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है। परन्तु विशेष परिश्रम करने पर आर्थिक स्थिति सामान्य हो जाती है।

इस योग के प्रभाव से जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे समय-समय पर षड्यन्त्र रचते रहते हैं, पर अपने कार्य में वे प्रायः सफल नहीं होते। जातक को अपने कुटुम्बियों से अपयश मिलता है एवं आत्मीय जन भी सम्मान नहीं देते हैं। अपने मित्रगणों के द्वारा छले जाते हैं। जिस कारण जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ऊँ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।

10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ऊँ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं –

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है।
- पंचम् भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुडली में सूर्य और गुरु के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें। रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राहमण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त

वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

चतुर्थभाव में सूर्य हो तो जातक परमसुन्दर, कठोर, पितृधननाशक, चिन्तास्त, भाईयों से वैर करने वाला, गुप्तविद्या प्रिय एवं वाहन सुखहीन होता है।

वृश्चिक राशि में रवि हो तो जातक साहसी, लोभी, चिकित्सक, लोकमान्य, क्रोधी उद्ययोगी, उदररोगी, पुलिस अधिकारी एवं सेना में उच्चपद प्राप्त करने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय होंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपका यत्नपूर्वक सहयोग करते रहेंगे। पिता से आपको धन, वाहन तथा अन्य प्रकार से सम्पत्ति अर्जित करते रहेंगे। इसके साथ ही नौकरी तथा व्यापार में भी आप उनसे सहयोग प्राप्त करते रहेंगे तथा उन्हीं के सहयोग से उन्नति भी करेंगे।

आप के मन में उनके प्रति सम्मान एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन में भी रूचि रहेगी। आपके परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु वह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में आप हमेशा उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगे तथा अवसरानुकूल वांछित सहायता भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान्, सुखी, स्थूलशरीर, गान वाद्य प्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान होता है।

सिंह राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दृढ़देही, दाँत तथा पेट का रोगी, मातृभक्त, अल्पसन्ततिवान्, गम्भीर, दानी, साहसी, शान दिखाने वाला अभिमानी, महत्वाकांक्षी एवं पुराने विचारों वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

मंगल

तृतीयभाव में मंगल हो तो जातक कटुभाष, भ्रतृकष्टकारक, प्रदीप्त जठराग्निवाला, बलवान्, बन्धुहीन, सर्वगुणी, साहसी, धैर्यवान् प्रसिद्ध एवं शूरवीर होता है।

तुला राशि में मंगल हो तो जातक प्रवासी, वक्ता, कामी, परधनहारी, उच्चाकांक्षी, लड़ाकू, कृपालु एवं परस्त्रियों की ओर झुकाव होता है।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। शक्ति, साहस तथा पराक्रम से वे युक्त रहेंगे। साथ ही जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको यथायोग्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। धन धान्य से भी वे युक्त रहेंगे एवं समयानुसार आपकी आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में आपकी पूरी सहायता करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी एवं सर्वदा विषम परिस्थितियों में भी उनका पूर्ण सहयोग करेंगे। आप के परस्पर संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा मतवैमिन्यता के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु वह अल्प समय के लिए रहेगा कुछ समय बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनको अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करेंगे। इस प्रकार आप भाई बहिनों के सुख मध्यम रूप से ही अर्जित कर सकेंगे।

बुध

चतुर्थभाव में बुध हो तो जातक पण्डित भाग्यवान् नीतिवान्, नीतिज्ञ, लेखक, विद्वान्, बन्धुप्रेमी, उदार, गतिप्रिय, आलसी , स्थूलदेही, वाहनसुखी एवं दानी होता है।

वृश्चिक राशि में बुध हो तो जातक व्यसनी, दुराचारी, मुर्ख, ऋणी भिक्षुक, अनैतिक चरित्र, रतिक्रिया की अति करने वाला, गुप्तांगों के रोगों से पीड़ित, स्वार्थी एवं अपशब्द बोलने वाला होता है।

गुरु

अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, नम्रव्यवहार, लेखक, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषप्रेमी, मित्रों द्वारा धननाशक, गुप्तरोगी एवं लोभी होता है।

मीन राशि में गुरु हो तो जातक लेखक, शास्त्रज्ञ, गर्वहीन, राजमान्य, शान्त, व्यवहार कुशल, दयालु, साहित्य प्रेमी, विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, साहसी एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, प्रतिभाशाली, वक्ता, कवि, पुत्रवान्, लाभयुक्त, व्यवसायी, शत्रुनाशक, उदार, दानी, सद्गुणी, न्यायवान् एवं आस्तिक होता है।

धनु राशि में शुक्र हो तो जातक धनी, बलशाली, स्वोपार्जित द्रव्य द्वारा पुण्य करने वाला, विद्वान, सुन्दर, लोकमान्य, राज्यमान्य, सुखी घरेलू जीवन, उच्चपद की प्राप्ति एवं प्रभावशाली होता है।

शनि

चतुर्थभाव में शनि हो तो जातक अपयशी, बलहीन, धूर्त, कपटी, शीघ्रकोपी, कृशदेही, उदासीन,वातपित्तयुक्त एवं भाग्यवान् होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरघ्दय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, क्रोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

राहु

अष्टम भाव में राहु हो तो जातक क्रोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, उदररोगी, कामी, पुष्टदेही एवं गुप्तरोगी होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

केतु

द्वितीय भाव में केतु हो तो जातक अस्वस्था, कटुवचन बोलने वाला, मुंह के रोग, राजभीरु एवं विद्रोही होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- चन्द्र
(18/07/2017 - 19/07/2027)

आपकी कुण्डली में चन्द्र की महादशा 18/07/2017 को आरम्भ तथा 19/07/2027 समाप्त होगी। इसकी अवधि दस वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में चन्द्र प्रथम भाव में अवस्थित है और आपके लग्न को बल प्रदान कर रहा है। यह आपकी शारीरिक संरचना, गठन, जीवन-शक्ति, ऊर्जस्विता, समृद्धि लम्बी आयु आदि का प्रतिनिधित्व करता है। संक्षेप में दस वर्ष की इस अवधि में आपको संतोष के साथ-साथ शांति और समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपकी समृद्धि अत्यंत सुदृढ़ होगी। यह अवधि गतिविधि से परिपूर्ण होगी।

स्वास्थ्य :

चन्द्र लग्न में अवस्थित है जो केन्द्र और त्रिकोण दोनों है। यह स्थिति सुखी और स्वस्थ जीवन सुनिश्चित करती है। इस दशा में कोई घातक रोग अथवा दुर्घटना नहीं होगी। आप स्वयं को शक्तिशाली अनुभव करेंगे और अपने दैनिक कार्यों का उपयुक्त ढंग से सम्पादन करने में समर्थ होंगे। आप सुन्दर हैं और अत्यन्त भावुक, कुतूहली, व्यग्र तथा बेचैन हैं।

धन सम्पत्ति :

आपका मस्तिष्क तथा बुद्धि अधिक धनोपार्जन की दिशा में प्रवृत्त हैं क्योंकि दशेश चन्द्र मस्तिष्क का कारक है। आप अपनी धन-सम्पत्ति की वृद्धि करेंगे। आपके बैंक बैलेन्स तथा अन्य सम्पत्तियों में वृद्धि की सम्भावना भी है।

व्यवसाय :

चन्द्र दशा के दौरान आप अपनी स्थिति तथा कार्य से संतुष्ट होंगे। यदि आप सेवारत हैं तो आपकी उन्नति के आसार हैं और व्यवसायी हैं तो व्यवसाय के विस्तार तथा नये कार्य के संकेत हैं। आपके मस्तिष्क में नये रचनात्मक विचार उभरेंगे जिनकी आपके सहकर्मी तथा उच्चाधिकारी सराहना करेंगे। चन्द्र दशा के कारण आपके व्यवसाय में आपकी स्थिति सुदृढ़ होगी और न्यायप्रियता तथा उच्चे आचरण के लिए आप प्रसिद्ध होंगे। आप ऐसे व्यवसाय का चयन भी करेंगे जिसमें उतार-चढ़ाव हो। आप अधिकार के इच्छुक होंगे। आप एक सतर्क व्यक्ति हैं।

पारिवारिक जीवन :

सप्तम भाव, जो साझेदारी का भाव है, पर चन्द्र की दृष्टि होने के कारण इस काल में आपकी साझेदारी और पारिवारिक जीवन उत्तम होंगे।

आपके जीवनसाथी पूर्ण सहयोगी और सुन्दर होंगे। आपकी माता भी पारिवारिक जीवन में आपकी सहायता करेंगी और आपके बच्चे आपके आज्ञाकारी होंगे। आपके पिता भी आपके व्यवसाय में आपकी सहायता कर आपको आत्म विश्वासी बनाएंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

तीस वर्ष की आयु के बाद आपका झुकाव उच्च शिक्षा की ओर होगा और आपकी धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन में रुचि होगी।

Pandit Srinivas Srimali, Pandit Jitendra Srimali
No. 130, Mint Street, 3rd floor, Sowcarpet, chennai - 600079
9884182821, 9841085352
Jksrimali27@gmail.com

अंर्तदशा :- चन्द्र - केतु
(17/10/2024 - 18/05/2025)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इसके अंतर्गत केतु अंतर्दशा 7 मास की रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 18/07/2017 को प्रारंभ हुई ओर 19/07/2027 को समाप्त होगी। केतु अंतर्दशा 17/10/2024 को प्रारंभ होकर 18/05/2025 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका के द्वितीय भाव में स्थित है। द्वितीय भाव भाग्य, लाभ-हानि, सांसारिक उपलब्धियां, रत्न, वाणी, दायीं आंख, महत्वाकांक्षा, जीभ, दांत और परिवार के सदस्यों का प्रतिनिधि है।

इस अवधि में आपको अग्नि, चोरी, मुकदमे या जुए आदि से धनहानि हो सकती है, कर्ज़ चढ़ सकता है। नेत्ररोग या शरीर के दायें भाग में कोई कष्ट हो सकता है। अध्यात्म में रुचि बढ़ेगी।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

1. श्वान को भोजन दें।
2. घर पर भूरा श्वान पालें।
3. गरीबों को मंदिर में कंबल बांटें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - शुक्र
(18/05/2025 - 17/01/2027)

चंद्र की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 18/07/2017 को प्रारंभ होकर 19/07/2027को समाप्त होगी।

इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 18/05/2025 को प्रारंभ होकर 17/01/2027 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्रिका के पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। पंचम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के एकादश भाव पर दृष्टि डाल कर उसके शुभत्व में वृद्धि कर रहा है।

इस अवधि में आपकी रुचि कविता और प्रेम आदि में होगी। लोकप्रियता और मित्रों की संख्या बढ़ेगी। बुद्धिमत्ता उत्तम रहेगी, धन का संचय होगा। सट्टेबाजी से भी धनलाभ हो सकता है। सरकार द्वारा सम्मानित हो सकते हैं।

शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के वैदिक मंत्र के 16,000 जाप करें।

महादशा :- मंगल
(19/07/2027 - 18/07/2034)

मंगल की महादशा 19/07/2027 को आरम्भ होगी और 18/07/2034 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्षों की होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल तृतीय भाव में स्थित है। नवम, दशम तथा षष्ठम भावों पर मंगल की दृष्टि हैं। इसके पूर्व चन्द्र की 10 वर्ष की दशा चल रही थी। आपको शत्रुओं पर विजय, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं, मातृ-पक्ष से लाभ आदि की संभावना है। मंगल की इस दशा के दौरान आपको शक्ति तथा ओज और भाइयों से सुख मिलेगा और जीवन में उन्नति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आप का स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आप में जीवन-शक्ति तथा ऊर्जा प्रचुर मात्रा में होगी और आप अत्यन्त उत्साही होंगे। आपमें पहल-शक्ति तथा साहस भी पर्याप्त होगा और आपको अपने लक्ष्य की प्राप्ति होगी। आपको सरदर्द, ज्वर, संक्रामण, पित्त-दोष अथवा गले से सम्बद्ध मौसमी बीमारियाँ हो सकती हैं। किन्तु, ये मामूली बीमारियाँ हैं। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ तथा व्यवसाय :

आप कठिन परिश्रम से अपने भविष्य का निर्माण स्वयं करेंगे। आप प्रगति करेंगे और आपकी कमाई अच्छी होगी। आपके प्रतिद्वन्दी आपके मार्ग में बाधाएँ खड़ी कर सकते हैं

और आपके मातृ-पक्ष के सम्बन्धियों के लिए समय कष्टकर हो सकता है। आपके लिए अदालत के मामलों और मुकदमों का निपटारा करा लेना उचित होगा। अपनी जीविका के लिये यान्त्रिकी अभियंत्रण, सैन्य सेवाओं, चिकित्सा-कार्य, दन्तचिकित्सा-कार्य औद्योगिक-प्रतिष्ठानों में रोजगार आदि का चयन कर सकते हैं। लौह-इस्पात, खेल के सामान, ताम्बे, खनिज पदार्थों तथा दवाओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को लाभ होगा, उनकी पदोन्नति होगी, उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा और कार्य स्थान में वातावरण अनुकूल रहेगा। व्यवसाय व्यापार से जुड़े लोगों के व्यवसाय में उन्नति तथा आय और लाभ में वृद्धि होगी। आप अपने ही प्रयासों से बहुत प्रगति करेंगे।

वाहन, यात्राएँ, सम्पत्ति :

शुक्र की अन्तर्दशा के कारण आपको सुखों की प्राप्ति होगी। इस अन्तर्दशा के फलस्वरूप, सुख-आराम तथा वाहनों की प्राप्ति की सम्भावना है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आपको कुछ आर्थिक पुरस्कार प्राप्त होगा। गणित, विज्ञान, संचार-माध्यमों से सम्बद्ध विषय आदि में आपकी रुचि होगी। आप खेलों, वाद-विवादों (चर्चा-परिचर्चाओं) तथा बाहरी गतिविधियों में भाग लेंगे। आपको परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। आपके प्रतिद्वंद्वी आपको कड़ी टक्कर देंगे।

परिवार :

अपने बच्चों के साथ आपका संबंध उत्तम रहेगा। वे अपने कार्यों में बहुत अच्छा करेंगे, आपको उनसे सुख मिलेगा तथा आप गौरवान्वित महसूस करेंगे। आपके जीवन साथी को समृद्धि तथा सम्बन्धियों से सहायता की प्राप्ति और जीवन में उन्नति होगी। आपके साझेदार के साथ आपका सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपकी माता की यात्रा होगी और आध्यात्मिक कार्यों में व्यय होगा। आपके पिता को साझेदारी और यात्रा में लाभ होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को ख्याति, शक्ति तथा अधिकार की प्राप्ति होगी जबकि बड़े भाई-बहनों को सफलता तथा सुख मिलेगा और निवेश में लाभ होगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपके मित्र बहुत अच्छे स्वभाव के होंगे जो आपकी बड़ी सहायता करेंगे और आपका उनके साथ समय सुखद बीतेगा।

अन्तर्दशा :

मंगल की मुख्य दशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति और भाई से सुख की प्राप्ति होगी और आपकी यात्राएँ होंगी। राहु के कारण कुछ समस्याएँ आएंगी। बृहस्पति की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको लाभ मिलेगा। लग्नेश शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको शक्ति, अधिकार, यश, ख्याति और समृद्धि की प्राप्ति होगी और आप यात्रा पर जाएंगे। बुध के कारण आपकी शिक्षा उत्तम होगी और जीवन में कुछ परिवर्तन होंगे। केतु की अन्तर्दशा कुछ समस्याएँ उत्पन्न करेगी। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप समृद्धि और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और सूर्य की अन्तर्दशा के के कारण साझेदारी में लाभ होगा। चन्द्र की अन्तर्दशा के कारण स्वास्थ्य कुछ खराब हो सकता है।

अंर्तदशा :- मंगल - मंगल
(19/07/2027 - 15/12/2027)

आपके लिए मंगल की महादशा 19/07/2027 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 19/07/2027 को प्रारंभ होकर 15/12/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आपकी साख उत्तम रहेगी, प्रसिद्धि मिलेगी और सुखी रहेंगे। प्रत्येक समस्या का सामना हिम्मत से करेंगे। स्पर्धियों पर विजय होगी। धनी होंगे और जीवन आनंदपूर्वक बिताएंगे। आय अधिक, खर्चे कम होंगे। शेयर, सट्टे आदि से अचानक धन मिल सकता है। मातहत सहयोग करेंगे। वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है। कार्यों में सफलता मिलेगी, अधिकारी प्रसन्न रहेंगे, भाईयों और मित्रों से लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी की लंबी यात्रा हो सकती है। आपके पिता को व्यापार में साझेदार मिल सकते हैं। उन्हें स्वास्थ्य का ख्याल रखना चाहिए। माता के खर्चे बढ़ सकते हैं। अध्यात्म में रुचि होगी। भाई-बहन निवेश से लाभ प्राप्त कर सकते हैं; वे प्रसन्न रहेंगे।

आपकी संतान के लिए समय सौभाग्यवर्धक है।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चपद प्राप्त करेंगे। परामर्शदाता स्पर्धियों पर विजयी रहेंगे। व्यापारी तरक्की करेंगे और विरोधियों को पीछे छोड़ देंगे।

आपकी रोगनिरोधक क्षमता और स्वास्थ्य उत्तम रहेंगे। सकारात्मकता में वृद्धि के लिए हनुमान चालीसा का पाठ करें।

अंर्तदशा :- मंगल - राहु
(15/12/2027 - 01/01/2029)

आपके लिए मंगल की महादशा 19/07/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 15/12/2027 को प्रारंभ होकर 01/01/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आप वसीयत, ग्रेच्युटि आदि से धन प्राप्त कर सकते हैं। जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार के माध्यम से धनार्जन हो सकता है। पराविद्या में रुचि हो सकती है। अध्यात्म में मन लगेगा। भौतिक सुखों में वृद्धि होगी। धन का संचय होगा। वाणी पर नियंत्रण रखें। कटु वचन बोलने पर घरेलू शांति भंग हो सकती है।

आपके जीवनसाथी धनार्जन करेंगे। आपके पिता के खर्चे बढ़ेंगे; उनकी अवांछित यात्राएं हो सकती हैं। माता को निवेश से लाभ होगा। भाई-बहनों को धन और सम्मान मिलेंगे; शत्रुओं पर विजयी होंगे।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम रहेगी। अगर वे सेवारत हैं तो अचल संपत्ति क्रय करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उत्साह और संकल्पशक्ति उत्तम रहेंगे। परामर्शदाताओं को अचानक लाभ हो सकता है या आय में वृद्धि होगी। व्यापारियों के धन में वृद्धि होगी।

छोटी-मोटी बीमारी को भी अनदेखा न करें, अन्यथा यह गंभीर रूप धारण कर सकती है। गठिया आदि से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए उड़द की दाल, सतनजा और नीले वस्त्रों का दान करें।

अंर्तदशा :- मंगल - गुरु
(01/01/2029 - 08/12/2029)

आपकी मंगल की महादशा 19/07/2027 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 01/01/2029 को प्रारंभ होकर 08/12/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

इस अवधि में आप कुछ धन बिना परिश्रम के भी प्राप्त कर सकते हैं। अचानक धन आ सकता है। आर्थिक स्थिति उत्तम होगी। अध्यात्म या पराविद्या में रुचि हो सकती है। उत्तम भोजन और वस्त्र उपलब्ध रहेंगे, परिवार में वातावरण मधुर रहेगा। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। माता से लाभ होगा। समाजसेवा में भाग लेंगे। शुभ कार्यों पर धन खर्च होगा।

आपके जीवनसाथी खूब धन प्राप्त करेंगे। आपके पिता धर्म और अध्यात्म में रुचि लेंगे। माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, वे शत्रुओं पर विजयी होंगी। आपके भाई-बहनों के कार्यालय उत्तम होंगे, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, कर्ज़ से मुक्ति मिलेगी, कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी।

आपकी संतान को कार्यों में सफलता मिलेगी; शिक्षा के लिए उत्तम समय है।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, लघु यात्राएं हो सकती हैं। परामर्शदाता और व्यापारी धन कमाएंगे।

स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा, मगर उदर रोगों से बचाव आवश्यक है। मामूली व्याधिओं को अनदेखा न करें। अरिष्ट से बचाव के लिए ब्रह्माजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- मंगल - शनि
(08/12/2029 - 17/01/2031)

आपके लिए मंगल की महादशा 19/07/2027 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 08/12/2029 को प्रारंभ होकर 17/01/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आप अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। धनी बनने का संकेत है। सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। घर में सुख-शांति आपके प्रयास से बनी रहेगी। जायदाद से किराये आदि की आमदनी बढ़ेगी। विदेश की यात्रा कर सकते हैं, वहां से लाभ होगा। तबादले और प्रोन्नति का संकेत है। सम्मान और धन में वृद्धि होगी, कार्यों में सफलता मिलेगी। शत्रुओं पर विजय होगी; हर बाधा को पार करने की इच्छाशक्ति मौजूद रहेगी।

आपके जीवनसाथी कार्यक्षेत्र में तरक्की करेंगे। आपके पिता के जीवन में अचानक परिवर्तन आ सकता है। उनका जनसंपर्क बढ़ेगा। आपके भाई-बहनों की आय में वृद्धि होगी, उन्हें कार्यों में सफलता मिलेगी, विरोधियों को परास्त करने की क्षमता रहेगी।

आपकी संतान को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे सेवारत हैं तो स्पर्धियों पर विजयी होंगे। उनके जीवन में कुछ परिवर्तन और यात्रा हो सकते हैं। खर्चे बढ़ सकते हैं। अगर आप सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी। परामर्शदाता उच्चपद प्राप्त करेंगे। व्यापारी अपने कार्य का विस्तार करेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छाती के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए पंचमुखी हनुमान कवच का पाठ करें।